109

110

शोध प्रारूप

''यशपाल का कथेतर साहित्यः एक अध्ययन''

वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा में
मानविकी संकाय के हिन्दी-विभाग के अन्तर्गत
पी- एच॰ डी॰ उपाधि हेतु
प्रस्तावित शोध- प्रारूप

शोध निर्देशक
पूनम कुमारी

शोधकर्त्री
रजनी प्रधान
ग्राम- परसागंडा
पो॰- खण्डरीचा
जिला- बक्सर

13.10.18

''यशपाल का कथेतर साहित्य: एक अध्ययन''

विषय का महत्त्व

यशपाल प्रेमचंदोत्तर साहित्यकारों में एक अत्यन्त समर्थ रचनाकार हैं। उन्होनें न केवल प्रेमचंद द्वारा प्राप्त विरासत की रक्षा की, बल्कि उसे संवर्धित भी किया है। एक योग्य साहित्यकार के रूप में उनका प्रेमचंद की परम्परा में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। वरिष्ठ आलोचक डॉ॰ मैनेजर पांण्डेय ने भी 'यशपाल रचनावली' की भूमिका स्वीकार करते हुए लिखा है कि ''यशपाल के बारे में बात करते यह बात याद रखना जरूरी है कि वे केवल रचनाकार नहीं, बल्कि वे प्रेमचंद की तरह सुनिश्चित दृष्टि के पत्रकार और विचारक भी हैं।'' (यशपाल का चिंतन यशपाल रचनावली खंड-पृ॰ XI) यशपाल मूलतः प्रगतिशील आंदोलन की उपज हैं, यही कारण कि उनका समस्त साहित्य मार्क्सवाद से कमोबेश प्रभावित रहा है।

हिन्दी के शोध-प्रबंधों और आलोचना साहित्य में उनके कथा-साहित्य पर काफी लिखा और पढ़ा जा चुका है, पर इनके अलावा उनमें कथेतर साहित्य पर जितना प्रकाश डाला जाना चाहिए था, उतना नहीं पड़ा। यशपाल कथाकार की दृष्टि से ख्यात तो हैं ही लेकिन उनका कथेत्तर साहित्य कम महत्वपूर्ण नहीं है। उन्होंने कथा-साहित्य की ही भाँति कथेतर गद्य का भी प्रभूत मात्रा में सृजन किया है। उनके कथेत्तर साहित्य के अन्तर्गत प्रमुखत: निबंध, संस्मरण (आत्मकथा) यात्रा-साहित्य, पत्रकारिता, पत्र-साहित्य आदि विधाएँ आती हैं। यशपाल के निबंधो में 'न्याय का संघर्ष' (1940) 'मार्क्सवाद' (1941) 'गांधीवाद की शव परीक्षा' (1942) 'चक्कर क्लब' (1943) 'बात बात में बात' (1950) 'राम राज्य की कथा' (1950) 'देखा सोचा समझा' (1951) 'जग का मुजरा' (1962) 'बीबी जी कहती हैं मेरा चेहरा रोबीला है' (1962) 'मैं क्यों लिखता हूँ' (1977) आदि महत्त्वपूर्ण हैं।

यशपाल के कथेत्तर साहित्य में निबंध को अधिक प्रसिद्धि मिली। अपने विचारात्मक साहित्य एवं चिंतन की अभिव्यक्ति के लिये यशपाल ने निबंध साहित्य का चुनाव किया। उन्होंने अपनी विचारधारा को अभिव्यक्त करने के लिए इस विधा का भरपूर उपयोग किया। यशपाल ने अपने साहित्यिक निबंधो में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं व्यक्तिव्यंजक विचारों को अभिव्यक्त किया है। कथा-साहित्य की भाँति निबंधो में भी उनका मार्क्सवादी दृष्टीकोण अभिव्यक्त हुआ है। उन्होंने समानता और समाजवाद के विरोध में धर्म और साहित्यिक कलावादियों का तीखा विरोध किया है। यशपाल ने अपने निबंधो के द्वारा अपनी विचारधारा के अनुरूप पूंजीवादी विकृतियों की तीव्र भर्त्सना की है। ओंकारनाथ शर्मा के शब्दों में ''प्रगतिवादी निबंधो के द्वारा द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी विचारधारा का इन्होंने सबसे अधिक प्रसरण किया है। इनके निबंध प्राय: मार्क्वादी विचारों से ओत-प्रोत होते हैं। इन्होंने सुदीर्घ प्रयत्न द्वारा प्राप्त अपने अनुभवों तथा अध्ययन से परिपुष्ट व्यक्तिगत विचारों को मार्क्सवादी सिद्धान्तों के साथ व्यावहारिक रूप में उपस्थित

किया है। कुछ मर्यादाओं के बावजूद यशपाल के निबंध हिन्दी-साहित्य की अन्यतम उपलब्धि हैं।'' 18
(हिन्दी अनुशीलन दिसम्बर 2003) यशपाल के निबंध संग्रहो की विषयवस्तु या स्वरूप के आधार पर विचारात्मक, आत्मव्यंजक, हास्य एवं कथात्मक आदि वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। विचारात्मक निबंधों के अन्तर्गत 'न्याय का संघर्ष' 'मार्क्सवाद' 'गांधीवाद की शव परीक्षा' और 'रामराज्य की कथा' आदि को परिगणित किया जा सकता है। यशपाल ने साहित्य-सृजन की शुरूआत सही मायनो में निबंध से की थी। क्योंकि इसके पहले 'पिंजरे की उड़ान' एक मात्र कथा-संग्रह प्रकाशित हुआ था। जेल से छुटते ही यशपाल ने बुलेट को त्यागकर बूलेटिन का सहारा लेने का ठान लिया। गिरफ्तारी के बाद जेल जीवन में उन्होंने जो अध्ययन-मनन किया उसी का परिपाक उनके निबंधो में दिखाई देता है। अपने राजनीतिक विचारों की अभिव्यक्ति उन्होंने निबंध जैसी सशक्त गद्य विधा के द्वारा की है।

'न्याय का संघर्ष' 1940 में प्रकाशित यशपाल का पहला निबंध संग्रह है। इस की भूमिका आचार्य नरेन्द्र देव ने लिखी है। उन्होंने लिखा है कि ''इस पुस्तक में हमारी नवीन परिस्थितियों के लिए अनुपयुक्त एवं जर्जर न्याय की धारणा का विश्लेषण किया गया है। इस निबंध संग्रह के 'मजहब का मुलम्मा' शीर्षक निबंध में यशपाल ने साम्प्रदायिकता को राष्ट्रीयता के लिये घातक माना है।'' उन्होंने लिखा है- ''जब तक मजहब का मुलम्मा, चाहे वह कट्टरता का गहरा मुलम्मा हो, चाहे सहिष्णुता का हल्का मुलम्मा हो, हम पर चढ़ा रहेगा हम आदमी के रूप में न पहचाने जायेंगे, न दूसरों को पहचान सकेंगे। न हमारी राष्ट्रीयता वहाँ पनप सकेगी, न हम राष्ट्रीयता के इस उद्देश्य की ओर एक भी कदम बढ़ा सकेंगे, जिसका हम इतना ढ़ोल पीट रहे हैं।'' (यशपाल, न्याय का संघर्ष, पृ॰ 231)

इस प्रकार यशपाल के अधिकांश निबंध विचारात्मक हैं। न्याय के संघर्ष में यशपाल ने सामाजिक वैषम्य से उत्पन्न विद्रुपताओं को रेखांकित किया है। 'मार्क्सवाद' यशपाल के चिंतन-मनन एवं वैचारिक प्रतिबद्धता का सशक्त प्रमाण है। 'बात बात में बात' के निबंधो की केन्द्रीय संवेदना नारी की सामाजिक स्थिति से सम्बद्ध है। 'गांधीवाद की शव परीक्षा' में गांधीवाद को समझने की नयी दृष्टि मिली है। 'रामराज्य की कथा' में गांधीवादी राजनीति का जहाँ पूर्वाग्रह रहित विवेचन हुआ है, वहीं न्याय और अहिंसा की मर्यादा पर, अंधविश्वासों पर प्रहार भी किया गया है। 'जग का मुजरा' में आज की सामाजिक समस्याओं का कथा चित्रों के माध्यम से उद्घाटन हुआ है। इन निबंधो में यशपाल के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं कथा सम्बंधी मौलिक विचारों के दर्शन होते हैं, जो वर्तमान समाज समस्याओं के लिए अत्यन्त प्रासंगिक है। यशपाल ने अपने संस्मरण 'सिंहावलोकन' भाग-1, 2, 3 में स्वाधीनता आंदोलन के क्रांतिकारी इतिहास पर प्रकाश डाला है। ''उनका यह संस्मरण क्रांतिकारी आंदोलन का वैचारिक इतिहास है।'' यशपाल ने अपने संस्मरणों में सभी क्रांतिकारियों पर लिखा। उन्होंने समस्त क्रांतिकारियों के प्रति एक ईमानदार तटस्थ और वस्तुनिष्ठ रूप से लिखा, जो वास्तव में आंदोलन के केन्द्र में थे।

यशपाल ने संस्मरण के तीन भाग लिखे, वे चौथा भाग पूरा नहीं कर सके। प्रथम भाग अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इस प्रथम भाग में उपलब्ध पाँच अध्याय- 'जोखिम की ओर प्रवृति', 'कांग्रेस के असहयोग आंदोलन में भाग', 'नेशनल कालेज', 'दल का काम' और 'हिन्दुस्तानी समाजवादी प्रजातंत्र सेना'। उन्होंने आंदोलन के केन्द्रीय व्यक्तित्व- भगत सिंह, राजगुरू, सुखदेव, बटुकेश्वर दत्त या चन्द्रशेखर आजाद, भगवतीचरण बोहरा, यशपाल आदि पर विस्तार से लिखा है। इसके अतिरिक्त उन्होंने परिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक, परिस्थितियों के बीच इन नेताओं को रखकर उनका विश्लेषण करते हुए पाठकों को ऐतिहासिक चेतना से लैस किया। इसके बाद का जो भी क्रांतिकारी आंदोलन का इतिहास [illegible] लिखा गया वहाँ यशपाल के 'सिंहावलोकन' के तथ्यों को हीआधार बनाया गया। यशपाल खुद क्रांतिकारी आंदोलन में एक महत्त्वपूर्ण कड़ी थे। इसलिए इसे आंदोलन का बहुत जीवंत चित्रण उनके संस्मरण-साहित्य में प्राप्त होता है।

यशपाल के जीवन का प्रारम्भिक काल अंग्रेज शासकों का औपनिवेशीक काल था। इस शासन को उखाड़ फेंकने के लिए जिन-जिन युवकों ने क्रांतिकारी मार्ग का अवलम्बन किया, उनमें यशपाल भी प्रमुख थे। स्कूली शिक्षा से ही उन्होंने कांग्रेस में शमिल सभी आंदोलनों में सहभागिता दी। यह वह काल है जब पूरे स्वतंत्रता आंदोलन पर गांधी का प्रभाव था। लेकिन 1921 में असहयोग आंदोलन के वापस लेने के बाद वे क्रांतिकारी आंदोलन की ओर झुके। तभी से कांग्रेस को त्यागकर उन्होंने क्रांतिकारी मार्गों को अपनाया। बाद में 'हिन्दुस्तानी समाजवादी प्रजातंत्रसेना' नामक क्रांतिकारी संगठन के माध्यम से स्वतंत्रता आंदोलन को नयी दिशा दी। इस क्रांतिकारी जीवन का अनुभव ही 'सिंहावलोकन' में अभिव्यक्त हुआ है। 'सिंहावलोकन' इहिास होने के साथ-साथ समूचे स्वधीनता आंदोलन की समीक्षा और उनकी व्यक्ति सम्पृक्ति का सृजनात्मक विवरण है।

स्वाधीनता संग्राम के लिए क्रांतिकारीयों के अवदान का इतिहास लिखने की बात लम्बे अरसे से चल रही थी। कुछ प्रयत्न भी हुए लेकिन उन लोगो के द्वारा किये गये जो बाहर के लोग थे। निश्चिय ही इसे सम्पन्न कराने के लिए एक ऐसे व्यक्ति की जरूरत थी जो इस आंदोलन के वैचारिक भावात्मक आयामों से वैयक्ति रूप से जुड़ा हो। 'सिंहावलोकन' द्वारा यशपाल ने इस महत्वपूर्ण कार्य को पूरा किया। यह क्रांतिकारी आंदोलन के इतिहास के साथ-साथ उनकी साहित्यिक सृजनात्मक कृति भी है। इब्बार रब्बी ने इस पुस्तक के औचित्य को रेखांकिंत करते हुए लिखा है कि- ''शस्त्र से लेकर साहित्य तक उनकी अद्‌भूत साहित्यिक यात्रा रही है जिसे समझने के लिए उनके क्रांतिकारी जीवन की पुस्तक 'सिंहावलोकन' को पढ़ना जरूरी है। भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद और भगवती चरण बोहरा आदि के बलिदान, उनके दल, सैन्य संगठन का विस्तृत वर्णन और विश्लेषण यशपाल ने यहाँ किया है। उनकी क्रांतिकारी दृष्टि ने इस पुस्तक को हिन्दी की अमर कृति बना दिया है।'' (इन्द्रप्रस्थ भारती दिसम्बर 2003 पृ॰ 29) इस कृति को प्रमाणिक और सक्षम बनाने के सम्बंध में यशपाल कहते है कि संस्मरणो के

व्यक्तिगत होने पर भी मैंने केवल स्मृति पर ही भरोसा नहीं किया है। यथासंभव स्मृति को प्रमाणिक आधारों, तत्कालीन अदालती दस्तावेजों और पत्रों द्वारा सही कर लेने की कोशिश भी की है। 16

निष्कर्षत: 'सिंहावलोकन' के तीनो खंडो में क्रांतिकारियों सहित यशपाल के क्रांतिकारी कार्य, समाजवाद और मार्क्सवाद में अटूट विश्वास के दर्शन होते हैं।

यशपाल का यात्रा-साहित्य भी काफी सुदृढ़ एवं महत्त्वपूर्ण है। यशपाल लेखक होने के साथ-साथ एक अच्छे घुमक्कड़ भी थे। उन्होंने अपने घुमक्कड़ी जीवन में आये अनुभवों को सृजनशीलता का आधार देकर यात्रा-विषयक सुन्दर कृतियों का निर्माण किया है। हिन्दी साहित्य में यात्रा-वर्णन विधाओं को लेकर लिखने वालों में यशपाल का नाम महत्त्वपूर्ण है। यशपाल ने अपनी यात्राओं का विवरण ''लोहे की दीवार के दोनों ओर'' 'राह बीती' 'स्वर्गोद्यान बिना साँप' इत्यादि में संकलित है। दिसम्बर 1952 में 'विश्वशांति' कांग्रेस के आयोजन में भारतीय शांति कमेटी के प्रतिनिधि मंडल में यशपाल जी भी शामिल थे। इस सिलसिले में यशपाल ने स्वीट्जरलैण्ड, आस्ट्रियॉ, रूस, जार्जिया और इग्लैंड की यात्रा की। अपनी इस यात्रा को लेखक ने पुस्तकार रूप में 'लोहे की दीवार के दोनो ओर' (1953) में संकलित किया है। इसमें यात्रा अनुभव को लेकर कुल छ: निबंध हैं जिसमें उन्होंने समाजवादी ओर पूंजीवादी देशों के जीवन ओर व्यवस्था का चित्रण किया है। यह यात्रा वर्णन इस रूप में भी प्रस्तुत किया गया है कि पाठक उन्हें देखने के लिए लालायित हो उठें। इस यात्रा-वर्णन में लेखक ने सभी देशों के होटल, व्यापार, यातायात सुविधाएँ, प्रकृति-चित्रण समाज रचना और जन-जीवन आदि का वर्णन कर अपनी जिज्ञासा का परिचय दिया है।

'राह बीती' (1956) यशपाल द्वारा लिखा गया दूसरा यात्रा विवरण हैइस यात्रा वर्णन में अधिकतर पूर्वी यूरोप के देशो का ही वर्णन है। लेखक ने इसमें चेकोस्लाविया, इटली, पूर्वी पश्चिमी जर्मनी, सूमानिया, अफगानिस्तान आदि देशों का वर्णन किया है। इस यात्रा वर्णन में विभिन्न देशों की दुकानों, रेस्तरां, कारखानें, स्कूलों आदि का वर्णन कर हर देश का अलग-अलग व्यक्तित्व उभारने की कोशिश सराहनीय है। इन विवरणों में लेखक की सूक्ष्म दृष्टि का परिचय मिलता है इसके साथ लेखक ने किंचित देशों की आर्थिक एवं सामाजिक व्यवस्था का चित्रण भी किया है। 'स्वर्गोद्यान बिना साँप' (1975) यात्रा-वर्णन के क्षेत्र में यशपाल जी की तीसरी कृति है जो मॉरिशस यात्रा पर आधारित है। सर्वप्रथम इस देश का अतीत ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य के साथ वर्णित है। यशपाल ने यात्रा के आरम्भ में 'द्वीप का अतीत' के अन्तर्गत वहाँ के निवासियों की अस्थिरता, शोषण, गुलामी और दास प्रथा का चित्रण किया है। साथ ही मॉरीशस की प्राकृतिक सुषमा का चित्रण बहुत मार्मिक एवं कलात्मक रूप में हुआ है। 'देखा सोचा समझा' (1951) में यात्रा वर्णन के अर्न्तत सेवाग्राम का दर्शन, 'शिमला से कुल्लू' 'यह है नैनीताल'

आदि का चित्रण है। 'बीबी जी कहती हैं मेरा चेहरा रोबीला है' (1959) में व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सामूहिक स्वतंत्रता एवं 'ताशकन्द लेखक मेला' आदि यात्रा-निबंधों में क्रमश: अल्मोड़ा ओर ताशकन्द-यात्रा का वर्णन है। इस तरह यशपाल का यात्रा-वर्णन है। इस तरह यशपाल का यात्रा-वर्णन हिन्दी साहितय की उपलब्धि है।

पत्रकारिता-साहित्य

यशपाल की पत्रकार के रूप में भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण रही है। छ: वर्षों के जेल जीवन में यशपाल के व्यक्तित्व में आमूल परिवर्तन हुआ। जेल से रिहाई के समय जब उनसे पूछा गया कि इन बदली हुई परिस्थितियों में उनका लक्ष्य क्या होगा, तो उन्होंने कहा था कि जो काम पहले बुलेट से करने का इरादा था उसे अब बूलेटिन से करूंगा। इसी मोड़ पर यशपाल का सही अर्थों में एक पत्रकार का जीवन प्रारम्भ होता है। यशपाल ने पत्रकारिता और लेखन को आजीविका बनाने में दृढ़ निश्चिय के कारण नवम्बर 1938 को 'विप्लव' का प्रवेशांक प्रकाशित किया। 1938 से 1940 तक 'विप्लव' का प्रकाशन हुआ। आर्थिक कठिनाइयों के बावजूद यशपाल ने 'विप्लव' के प्रकाशन का जो निश्चय किया, उस काल की तुलना में बहुत बड़ा साहस था। 1939 में 'विप्लव' का उर्दू संस्करण 'बागी' नाम से प्रारम्भ हुआ। 'विप्लव' एक मासिक पत्रिका थी। 'विप्लव' नवम्बर 1938 से प्रारम्भ हुई और जून 1940 तक अंग्रजी सरकार के दमन के चलते बन्द हो गयी। इसके बाद सितम्बर 1940 से लेकर जून 1940 तक विप्लव की जगह 'विप्लव ट्रैक्ट' के नाम से निकला। राजनीतिक वातावरण, युद्ध की परिस्थितियाँ, भारत छोड़ो आंदोलन, जैसे हालात में 'विप्लव' का प्रकाशन असम्भव हो गया। 1947 में 'विप्लव' को यशपाल ने पुनरूज्जीवित किया और मार्च-अप्रैल 1949 तक निकला। इसके साथ ही वे 'रक्ताभ' मासिक पत्र के प्रधान संपादक (नवम्बर 1947 से 1948 तक) रहे। इसके बाद जब 'नयापंथ' लखनऊ से प्रकाशित होने लगा तो इसमें प्रधान संपादक बने।

हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास का मूल्यांकन करने पर यह ज्ञात होता है कि यशपाल ने प्रतिकूल अवस्था में 'विप्लव' के माध्यम से विचार जागरण का दायित्व पूरा किया। यशपाल एक निर्भीक पत्रकार थे। तत्कालीन सभी आंदोलन के संदर्भ में जनमत प्रकट कर उन्होंने 'विप्लव' को समाजभिमुख बनाया। यशपाल की टिप्पणियों की यह विशेषता रही है कि वे सभी प्रकार के अत्याचारों का निषेध करती हैं। अंग्रजों द्वारा ढाये जाने वाले जुल्म, नारी, किसान, मजदूर इत्यादि पर शोषकों के अत्याचार, साम्प्रदायिक संकीर्णता आदि पर टिप्पणियाँ लिखकर 'विप्लव' ने अपना सामाजिक दायित्व पूरा किया है। इस पत्रिका में लेख, स्तंभ, कहानी, नाटक आदि सभी साधनों का प्रयोग किया गया। 'विप्लवी ट्रैक्ट' में तो 'रानी की डायरी' शीर्षक के अन्तर्गत स्त्री समस्या पर विचार किया जाता था। गांधी जी की मृत्यु के उपरान्त संपादकीय लिखकर सिद्ध किया की संघर्ष विचारों का है, व्यक्ति का नहीं'।

यह निर्विवाद सत्य है कि यद्यपि 'विप्लव' निकालने का मूल उददेश्य राजनीति चेतना जाग्रत करना था तथा मार्क्सवाद के प्रचार में उसने ऐतिहासिक कार्य किया। एक संपादक के रूप में यशपाल ने हमेशा जाग्रत, तर्कशील पक्षधर पत्रकार की भूमिका अदा की। अंग्रेजी शासन के सख्त सेंसरशिप के बावजूद, जब्ती और जमानत के कठिन दौर से गुजरकर उन्होनें हिम्मत नहीं हारी। हिन्दी पत्रकारिता जगत में यशपाल की पत्रकारिता अपनी निर्भीकता, मानवतावादी, दृष्टिकोण और जनप्रतिबद्धता के कारण निरन्तर पथ प्रदर्शक बनी रहेगी।

विषय का औचित्य

वस्तुतः वैचारिक निबंधों क्रांतिकारी संस्मरणों मार्मिक यात्रा–साहित्य और निर्भीक पत्रकारिता के क्षेत्र में यशपाल के कथेत्तर साहित्य का योगदान उल्लेखनीय है। यशपाल ने कथा साहित्य के साथ–साथ अपने निबंधों, संस्मरणों और पत्रकारिता के द्वारा भारतीय समाज में प्रगतिशील चेतना जाग्रत करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। उनके कथेत्तर साहित्य का निश्चित रूप से साहित्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान है और इस रूप में इस शोध कार्य की सार्थकता और प्रासंगिकता भी है आज इक्कीसवीं शताब्दी में हमें विचारों की दृष्टि से साहित्य की यात्रा करनी होगी तो हमें यशपाल के पास जाना ही होगा। हम उनके विचारों के प्रकाश में भविष्य की पीढ़ी का भी मार्ग दर्शन कर सकते हैं। क्योंकि उनके विचार मानवतावाद के साथ–साथ वैज्ञानिकता और तर्क पर आधारित है।

शोध प्रविधि

शोध प्रविधि की दृष्टि से आलोचनात्मक, गवेषणात्मक एवं तुलनात्मक प्रविधि का प्रयोग किया जायेगा।

इस शोध प्रबंध को निम्न अध्यायों में विभाजित कर शोध कार्य सम्पन्न किया जायेगा।

भूमिका	
प्रथम अध्याय	यशपाल का जीवन परिचय एवं कृतित्व
द्वितीय अध्याय	यशपाल कालीन परिस्थितियाँ
तृतीय अध्याय	यशपाल का निबंध–साहित्य
चतुर्थ अध्याय	यशपाल का संस्मरण एवं आत्मकथा साहित्य
पंचम अध्याय	यशपाल का यात्रा–साहित्य एवं पत्र–साहित्य
षष्ठ अध्याय	यशपाल की पत्रकारिता
उपसंहार	

रजनी प्रधान

शोधकर्त्री
रजनी प्रधान
ग्राम–परसागंडा
पो०–खण्डरीचा
जिला–बक्सर

शोध निर्देशक
पूनम कुमारी
हिन्दी विभाग
सहजानन्द ब्रह्मर्षि कॉलेज,
आरा

[illegible] .18

आधार ग्रंथों की सूची

(1) सिंहावलोकन — (भाग 1,2,3) यशपाल लोकभारती प्रकाशन, 15 ए, महात्मा मार्ग, इलाहाबाद

(2) यशपाल के निबंध — सिंहावलोकन, भाग 1,2,3 यशपाल लोकभारती प्रकाशन, 15 ए, महात्मा मार्ग, इलाहाबाद

(3) न्याय का संघर्ष — सिंहावलोकन, भाग 1,2,3 यशपाल लोकभारती प्रकाशन, 15 ए, महात्मा मार्ग, इलाहाबाद

(4) मार्क्सवाद — सिंहावलोकन, भाग 1,2,3 यशपाल लोकभारती प्रकाशन, 15 ए, महात्मा मार्ग, इलाहाबाद

(5) गांधीवाद की शव परीक्षा — सिंहावलोकन, भाग 1,2,3 यशपाल लोकभारती प्रकाशन, 15 ए, महात्मा मार्ग, इलाहाबाद

(6) चक्कर क्लब — सिंहावलोकन, भाग 1,2,3 यशपाल लोकभारती प्रकाशन, 15 ए, महात्मा मार्ग, इलाहाबाद

(7) बात बात में बात — सिंहावलोकन, भाग 1,2,3 यशपाल लोकभारती प्रकाशन, 15 ए, महात्मा मार्ग, इलाहाबाद

(8) रामराज्य की कथा — सिंहावलोकन, भाग 1,2,3 यशपाल लोकभारती प्रकाशन, 15 ए, महात्मा मार्ग, इलाहाबाद

(9) जग का मुजरा — सिंहावलोकन, भाग 1,2,3 यशपाल लोकभारती प्रकाशन, 15 ए, महात्मा मार्ग, इलाहाबाद

(10) मैं क्यों लिखता हूँ — सिंहावलोकन, भाग 1,2,3 यशपाल लोकभारती प्रकाशन, 15 ए, महात्मा मार्ग, इलाहाबाद

यात्रा साहित्य

(11) लोहे की दीवार दोनो ओर — सिंहावलोकन, भाग 1,2,3 यशपाल लोकभारती प्रकाशन, 15 ए, महात्मा मार्ग, इलाहाबाद

(12) राह बीती — सिंहावलोकन, भाग 1,2,3 यशपाल लोकभारती प्रकाशन, 15 ए, महात्मा मार्ग, इलाहाबाद

(13) स्वर्गोद्यान बिना साँप — सिंहावलोकन, भाग 1,2,3 यशपाल लोकभारती प्रकाशन, 15 ए, महात्मा मार्ग, इलाहाबाद

(14) देखा सोचा समझा — सिंहावलोकन, भाग 1,2,3 यशपाल लोकभारती प्रकाशन, 15 ए, महात्मा मार्ग, इलाहाबाद

12

(15) बीबी जी कहती है — सिंहावलोकन, भाग 1,2,3 यशपाल लोकभारती प्रकाशन,
मेरा चेहरा रोबीला है — 15 ए, महात्मा मार्ग, इलाहाबाद

(16) यशपाल रचनावली, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

(17) यशपाल — नशे नशे की बात

(18) 'विप्लव' — यशपाल

आलोचनात्मक ग्रंथों की सूची

(1) डॉ॰ उपाध्याय मृत्युंजय — हिन्दी निबंध के सौ वर्ष, गिरनार प्रकाशन, पिलानीगंज, महेसाना, उत्तर गुजरात-1, प्रथम संस्करण-1990

(2) डा॰ उपाध्याय कमलापति — हिन्दी आत्मकथा साहित्य का शैलीगत अध्ययन, साहित्य रत्नालय, गिलिस बाजार, कानपुर-208001, प्रथम संस्करण

(3) डॉ॰ गुप्त गणपतिचंद्र — आधुनिक साहित्य और साहित्यकार एंटलांटिक पब्लिशर्स ॲन्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स 4215/1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण 1989

(4) डॉ॰ गुप्त गणपतिचंद्र — साहित्यिक निबंध लोकभारती प्रकाशन 15 ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद पंद्रहवा संस्करण-1999

(5) गुप्त सरोज — यशपाल: व्यक्तित्व और कृतित्व अनुराग प्रकाशन अजमेर प्रथम संस्करण

(6) गुप्त गंगाराम — हिन्दी साहित्य में निबंध और निबंधकार रचना पंकाशन, इलाहाबाद संस्करण-1971

(7) सं. गोयनका कमलकिशोर — यशपाल कुछ संस्करण पराग प्रकाशन 3/114, कर्ण गली विश्वासनगर शहादरा, दिल्ली-32 प्रथम संस्करण-1989

(8) डॉ॰ त्रिवेदी भूलिका — यशपाल: व्यक्तित्व एवं कृतित्व चिंतन प्रकाशन, नौबस्ता कानपुर-21 संस्करण-1971

(9) डॉ॰ 'नलिन' जयनाथ — हिन्दी निबंधकार, रामलाल पुरी संचालक आत्माराम ॲन्ड सन्ज कश्मीरी गेट दिलली-6 द्वितीय संस्करण 1964

(10) पाल प्रकाशन — लाहौर से लखनौ तक, विप्लव कार्यालय 335 बी, महानगर लखनऊ-226006 द्वितीय संस्करण-1997

(11) पैप्सु सरकार — श्री यशपाल अभिनंदन ग्रंथ, पंजाबी विभाग, पटियाला

(12) प्रसाद कमला — भारतीय साहित्य के निर्माता: यशपाल साहित्य अकादमी रविन्द्र भवन, 35 फिराजशाह मार्ग नई दिलली- प्रथम संस्करण 1984

(13) सं. मधुरेश — क्रांतिकारी यशपाल: एक समर्पित व्यक्तित्व लोकभारती प्रकाशन, 15 ए, महात्मा मार्ग, इलाहाबाद

(14) सं. मधुरेश — यशपाल के पत्र दि मैकेनिकल कंपनी ऑफ इंडिया लि॰ नई दिल्ली प्रथम संस्करण-1977

(15) सं. मु. ब. शहा — हिन्दी: कथेतर साहित्य, यशवंत राव चाव्हाण मुक्त विद्यापीठ नाशिक, प्रथम संस्करण-नवम्बर 2001

त्रिका एवं विशेषांक

इंद्रप्रस्थ भारती (यशपाल विशेषांक)	दिसंबर, 2003
कल्पना	जनवरी, 1959
सा॰ जनसत्ता	28 दिसम्बर, 1952
नया ज्ञानोदय	अंक-7, सितंबर, 2003
विविधा	1960
साहित्य अमृत	अंक-12, जुलाई, 2001
सारिका	16, सितंबर, 1978
संकेत	सं. अश्क उपेन्द्रनाथ
हिंदी अनुशीलन	अंक-4, दिसंबर, 2003